CHAPTER 2

(क) गीत गाने दो मुझे

(ख) सरोज स्मृति

PAGE 13, प्रश्न और अभ्यास

(क) गीत गाने दो मुझे

12:1:2:प्रश्न और अभ्यास:1

कंठ रुक रहा है, काल आ रहा है- यह भावना कवि के मन में क्यों आई?

उत्तर: यह भावना कवि के ह्रदय में इस लिए आयी क्योँकि का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा है। कवि ने अपने जीवन में बहुत कठिन परिस्थितियों का सामना किया है। कवि के जीवन में दुखों ने कभी पीछा नहीं छोड़ा। कवि शोषित वर्ग पर होने वाले अत्याचार देखकर दुखी हो जाता है। उसके विरोधी आवाज को हमेशा दबा दिया गया। परन्तु उसने बिना हार मानने लड़ाई जारी रख्खी। लेकिन इन सभी परिस्थितियों

के कारण कवि के जीने की इच्छा खत्म हो चुकी है। इस दुखो से उसकी स्थिति मरणासन्न हो गयी है। उसे प्रतीत होता है की उसकी मृत्यु अब समीप है और उसके कंठ अब कुछ कहने की स्थिति में नहीं है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास2:

'ठग-ठाकुरों' से कवि का संकेत किसकी ओर है?

उत्तर: कवि ठग-ठाकुर शब्द के द्वारा समाज में प्रचलित धोखेबाजों की ओर संकेत कर रहा है। कवि का तात्पर्य है की समाज में धोखेबाजों लोग फैले हुए हैं। वे गरीब किसानों और मजदूर को अपना शिकार बनाते हैं। धोखेबाजों लोग लगातार गरीब किसानों और मजदूर का शोषण करते हैं और गरीब किसानों और मजदूर के जीवन को नारकीय बनाते हैं। वे सामंती वर्ग के प्रतिनिधि हैं जिनका उद्देश्य किसानों और मजदूरों का खून चूसना है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास3:

'जल उठो फिर सींचने को' इस पंक्ति का भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: यह पंक्ति हमें निराशा और दुःख से उभरने के लिए प्रेरित करती है। कवि के अनुसार मनुष्य को एक बार फिर निराशा और दुःख से उभरने का प्रयास करना चाहिए। यह कविता निराशा तथा दुख से लड़ने के लिए प्रेरित करने के साथ साथ आगे बढ़ने का मार्ग भी दर्शाती है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास4:

प्रस्तुत कविता दुख और निराशा से लड़ने की शक्ति देती है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: प्रस्तुत कविता दुःख और निराशा से लड़ने की प्रेरणा देती है। इसे पढ़ने से प्रेरणा का संचार होता है। कवि के अनुसार आज का समय दुःख और निराशा से भरा हुआ है। जीवन कठिन और संघर्षमय हो गया है। यह आवश्यक है कि मनुष्य संघर्ष के लिए तैयार रहे। हाथों को पकड़कर कठिन समय से बाहर निकलने का एकमात्र मार्ग संघर्ष है।

(ख) सरोज स्मृति

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास1 :

सरोज के नव-वधू रूप का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

उत्तर: कवि के अनुसार, उनकी बेटी सरोज विवाह के समय कामदेव की पत्नी रति की तरह सुंदर दिखती है। जब वह हल्के से हँसती है तो ऐसा लगता है जैसे दामिनी उसके होंठों के बीच फंसी हुयी प्रतीत होती है। खुशी के कारण उसकी आँखों में चमक आ गई। वह रूप और गुणों में अपनी माँ की छाया लगती है। एक नई नवेली दुल्हन की आंखे लज्जा तथा संकोच से चमक से भर कर झुक जाती है। उनकी की बेटी की आँखें भी झुक गई हैं और चमक से भर गई हैं। आँखों की चमक धीरे धीरे होंठो पर फ़ैल रही है। यह चमक उनकी बेटी के होठों में एक स्वाभाविक कंपन पैदा कर रही है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास2:

कवि को अपनी स्वर्गीया पत्नी की याद क्यों आई?

उत्तर: अपनी पुत्री को दुल्हन के रूप में देखकर कवि को अपनी पत्नी का स्मरण हो आया। दुल्हन के वस्त्रो में उनकी पुत्री बहोत सुन्दर लग रही है। उसके अंदर उसकी माँ की छवि है। अपनी बेटी को दुल्हन के रूप में देख कर कवि भाव विभोर हो जाते है। पुत्री के रूप में उन्हें अपनी पत्नी का रूप स्मरण हो जाता है। विवाह के समय पुत्री को उसकी माँ गृहस्थ जीवन का ज्ञान देती है परन्तु पत्नी के नहीं होने पर कवि ने यह दायित्व पूरा किया। ऐसे महत्वपूर्ण परिस्थिति उसे अपने पत्नीका स्मरण करा रही है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास3:

'आकाश बदल कर बना मही' में 'आकाश' और 'मही' शब्द किसकी ओर संकेत करते हैं?

उत्तर: ये शब्द श्रृंगार से परिपूर्ण कल्पनाओं तथा उनकी पुत्री सरोज की ओर संकेत। कवि अपनी कल्पनाओं में श्रृंगार भाव वाली कल्पनायें करते थे। अपनी पुत्री को वधु के रूप में देखकर उन्हें प्रतीत हुआ की उनकी कल्पनाये पृथ्वी पर उतर

आयी है। इसीलिए वे श्रृंगार भाव की कल्पनाये के लिए आकाश तथा अपनी पुत्री के लिए मही शब्द का प्रयोग करते है।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास4:

सरोज का विवाह अन्य विवाहों से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर: सरोज का विवाह चमक दमक तथा शोर-शारबे के बिना हुआ था। सरोज का विवाह सादगी से हुआ। सरोज के विवाह में सभी सगे सम्बन्धियों और मित्रों को नहीं बुलाया गया। सरोज के विवाह में सिर्फ परिवार के कुछ सदस्य सम्मिलित थे। उसके विवाह में मेंहंदी तथा संगीत भाव था। लोगो की भीड़ नहीं थी और किसी ने विवाह गीत भी नहीं। माँ की अनुपस्थिति में कवि ने सारे दायित्व पूर्ण किये और अपनी पुत्री की गृहस्थ जीवन के लिए कुछ नसीहते दी।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास5:

'वह लता वहीं की, जहाँ कली तू खिली' पंक्ति के द्वारा किस प्रसंग को उदघाटित किया गया है?

उत्तर: कवि निराला जी ने इस पंक्ति के माध्यम से सरोज के पालन-पोषण का प्रसंग बताया है। पत्नी मनोहर की मृत्यु के बाद, उनकी बेटी का पालन-पोषण उनके नाना-नानी ने किया। पत्नी मनोहारी एक लता के रूप में वहाँ बड़ी हुई अर्थात मनोहारी का जन्म और पालन पोषण उसके माता-पिता की देखरेख में हुआ था। जब लता बड़ी हुई तो उस बेल में एक कली की तरह खिल गए यानी मनोहारी के बच्चे के रूप में सरोज का जन्म हुआ। लेकिन अपनी माँ की अचानक मृत्यु के बाद वह अपने नाना-नानी की देखरेख में युवावस्था प्राप्त करने के बाद एक युवती बन गई। लता का सारा बचपन नाना द्वारा बीता और आपने युवावस्था में प्रवेश किया।

:12:1:2प्रश्न और अभ्यास6:

मुझ भाग्यहीन की तू संबल ' निराला जी की यह पंक्ति क्या 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ायो ' जैसे कार्यक्रम की मांग करती है।

उत्तर: यह पंक्ति बेटी बचाओ की माँग करती है क्योंकि निराला जी अपनी बेटी को खोने के बाद अकेले महसूस कर रहे हैं। सरोज उनका जीवन थी। पिता ने विवाह के समय माँ की सारी शिक्षा सरोज को दी। अचानक बेटी के शव को देखकर कवि को अपना जीवन शून्य लगता है उनके लेखन से जो लिखा गया है वह बेहद मार्मिक है।

“कन्ये !गत कर्मो का दर्पण
करता मैं तुझको अर्पण
धन्ये मैं पिता निरर्थक था
कुछ भी तेरे हित कर न सका “
ये पंक्तियाँ बताती हैं कि बेटी बचाओ ।

12:1:2:प्रश्न और अभ्यास:7

निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

(क) नत नयनों से लोक उतर

(ख) श्रृंगार रहा जो निराकार

(ग) पर पाठ अन्य यह, अन्य कला

(घ) यदि धर्म, रहे नत सदा माथ

उत्तर:

(क) नत नयनों से अलोक उतर : कवि के अनुसार उनकी बेटी विवाह से बहुत प्रसन्न है। उसकी बेटी जो नवविवाहित है लज्जा से उसकी आँखें चमक रही हैं। कुछ समय बाद चमक उसकी आँखों से उसके होंठों तक उतरती है।

(ख) श्रृंगार रहा जो निराकार: इस पंक्ति से कवी का तात्पर्य ऐसे श्रृंगार से है जिसका कोई आकार नहीं है। इस प्रकार के श्रृंगार ही रचनाओं को प्रभावित करते है। कवी ने अपनी पूर्ववत रचनाओं में जिस सौंदर्य का वर्णन किया है वो उन्हें अपनी नव-वधु पुत्री के श्रृंगार में नज़र आता है।

(ग) पर पाठ अन्य यह, अन्य कला: इस पंक्ति में कवि को अपनी बेटी को देखकर अभिज्ञान शाकुन्तलम् रचना की नायिका शकुंतला का स्मरण होता है। उनकी पुत्री का जीवन शकुंतला से मिलता है जैसे माता का देहांत होना है, पिता के द्वारा पालन-पोषण और विवाह में माता के कर्तव्यों का निर्वाह पिता के द्वारा करना। परन्तु व्यवहार तथा शिक्षा में सरोज शकुंतला से बहुत अलग थी। अतः कवि कहता है की यह पथ कुछ विषयो पे समान हैए अतः कुछ विषयो पे अलग है।

(घ) **यदि धर्म, रहे नत सदा माथ: प्रस्तुत पंक्ति में, कवि अपने पिता के धर्म का पालन करने के लिए दृढ़ है। वह हमेशा अपने पिता के धर्म का पालन करना चाहता है।**